रविवार दिनाँक 03-11-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।

यह तो कभी भी छिपता नहीं है।
यह तो कभी भी मिटता नहीं है ।।
हर दम दिखता रहता है ।
मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह तो कहीं से आता नहीं है।
यह तो कहीं भी जाता नहीं है ।।
हर अन्दर सजता है ।
मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

इस की तो है शान निराली।
चारों ओर है जिसकी लाली ।।
कैसा सुन्दर लगता है ।
मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

जनचर बनचर है इसके सवाली।
सजनों यह है सतवस्तु का वाली ।।
चतुर्भुजधारी लगता है ।
मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

अजर अमर है अडौल निश्चल ।
सबका है यह मालक पालक ।।
बेअन्त बेअन्त कहलाता है ।
मेरे सामने यह दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह दर्शन तस्वीर नहीं है ।
यह दर्शन तो शरीर नहीं है।।
यह दर्शन है अपना आप।
ज्योति स्वरूप है ब्रह्म प्रकाश ।।
इसका ही सजनों करना जाप ।
मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

जानो, साजन परमेश्वर सभी सुरतों का आधार है। इसीलिये हर सुरत का कर्त्तव्य बनता है कि वह हर क्षण उस महान दर्शन को दृष्टिगत रखते हुए जगत में आत्म-निर्भरता से विचरना आवश्यक समझे। मानो यह कोई कठिन कार्य नहीं है क्योंकि परमात्मा कहीं अन्यत्र नहीं, जहाँ हमें उसे ढूँढना पड़े। वह दर्शन तो आत्मा में ही दृष्टिगोचर है। इस हेतु मात्र अपने ख़्याल/सुरत को आत्म-स्थित करने की आवश्यकता है। इतना सा पुरुषार्थ दिखाकर व खुद पर नियन्त्रण रखते हुए हम हर क्षण उस दर्शन का अनुभव सहज ही कर सकते हैं और अपने जीवन को आनन्दमय बना सकते हैं। सजनों यह कोई लम्बा या दुर्लभ कार्य नहीं है, अतः पुरुषार्थ करो। इसके लिये सब फुरने समेटकर अपने ख़्याल/सुरत को आत्म-स्थित कर दो। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर अपने ख़्याल का तार ध्यानपूर्वक साजन परमेश्वर संग जोड़ लो तो आत्म-प्रकाश आपके हृदय में पूर्ण रूप से उतरकर हृदय को प्रकाशित कर देगा। इस तरह इस काम को बड़ी लगन से करते हुए समरसता से इस सर्वोत्तम स्थिति में सदा बने रहो तो मोक्ष का द्वार अपने आप खुल जायेगा। फिर इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रयास करने की आवश्यकता शेष नहीं रहेगी। अब ध्यान से सुनोः-

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
संसार सागर तों महाबीर जी लंघावन, नाम दा कवच पहना।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत बढ़ावीं, रघुनाथ जी नू देसन मिला।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
सांवली सूरत नाल प्रेम बढ़ावीं, पंजां नू देवन भजा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
सारी उमर दुःखां विच गुजारी, हुन रघुनाथ जी दे दर्शन पा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
विषयां विच न उमर गवावीं, प्रीति हरि चरणां विच ला।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
नाम महाबीर जी दा हृदय विच ध्यावीं, चरण रघुनाथ जी दे देसन दिखा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
कंडयां दे रस्ते मूल न जावीं, उमर रघुनाथ जी दे चरणां विच बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
अंध कूप विचों बली जी कढेसन, हर श्वास नाम ध्या।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

वाशना नू तुसी परे हटाओ, अन्धेरा देसन हटा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
कई सूरजां दा सूरज तू पावें, सारी उमर आनन्द दी बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
मैं दासी सुरति सुरति पुकारां, हरदम चरणां विच जा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

यहाँ सच्चेपातशाह जी बड़े सहज और सरल शब्दों में कलुकालवासियों को सभी फुरनों से आज़ाद होने का आवाहन देते हुए कह रहे हैं कि आत्मा में जो परमात्मा स्थित है, उन संग अपने ख़्याल को जोड़ लो। इस प्रकार अपने यथार्थ की पहचान करते हुए वह हमें जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं। आगे फिर अपने जीवन को आनन्दमय बनाने हेतु कह रहे हैं कि हे सजनों ! अपने ख़्याल को अन्तर्मुखी कर आद् शब्द में लीन कर लो। ऐसा करना केवल तभी सम्भव हो सकता है जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति को हम अपना लें। जानो वह युक्ति हम सब सजनों को द्वारे से मिली हुई है। उस युक्ति पर स्थिर बने रहने के प्रति सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें सदा सचेत कर रहा है। सजनों इतनी अपार कृपा होने पर भी अगर हम जागृति में नहीं आते तो हम कसूरवार हैं। इसी भूल के कारण ही हमने अपने जीवन के निष्कंटक मार्ग पर अग्रसर करने के स्थान पर काँटों भरे रास्ते यानि दुःख भरे रास्ते पर प्रशस्त कर रहे हैं। इस प्रकार भौतिक सुखों को सुख मानकर वहीं उस रास्ते पर ही रुककर रह गये हैं। जानो भौतिक सुख तो क्षणभंगुर/नाशवान होते है। पर सच्चेपातशाह जी तो हमें अपने यथार्थ से परिचित कराते हुए अमरता का प्रतीक बनने की सलाह दे रहे हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिये बनता है कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जो नाम-युक्ति हमें प्राप्त हुई है उसको यथा नियमित ढँग से चलाते हुए वर्त-वर्ताव में लाकर अपने जीवन को आनन्द से भर लें। इसके लिये अब ख़्याल को पलटा खवाओ। अतः हिम्मत दिखाओ, खुद पर विश्वास रखो कि यह हम कर सकते हैं। इस तरह अपनी सकारात्मक सोच बनाओ, घबराओ मत और इन्सानियत में ढल जाओ।

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

देखो श्री राम जी ओ प्रजा विच वसदा।
जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।
ओ जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।।
जम रहे कई मर रहे कई मरने नूं खड़े तैयार।
राम नाम बलधार भजो राम नाम बलधार।।

श्री राम जी रमणे वाले हो, रम रहे हो भरपूर।
राम नाम नूं याद करने वाला है कोई ज़रूर।
हां हां है कोई ज़रूर, वाह वाह है कोई ज़रूर।।
कोना कोना डाली डाली, श्री राम है भरपूर।।
अनुरागी ते सतवादी दी बन्दगी है ओथे मन्जूर।
हां हां है ओथे मन्जूर, वाह वाह है ओथे मन्जूर।।
राम जपो राम जपो राम जपने दा वेला।
राम जपो जीवन बना लौ, जीवन बनावने दा वेला।
हां हां जीवन बनावने दा वेला, वाह वाह जीवन बनावने दा वेला।।
श्री राम जी दी रोशनी, रोशनी है ओ कमाल।
रोशनी ओ सब कोई वर्ते, कोई विरला परखे ओ यार।
हां हां कोई विरला परखे ओ यार, वाह वाह कोई विरला परखे ओ यार।।

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हम भटके हुए इन्सानों को पुनः जागृति में लाने के लिये समझाते हुए उत्साहित कर रहा है कि अपनी सुरत को सम्भाल लो। कहीं हमारी सुरत जगत में उलझकर आत्म-विस्मृत न हो जाये, उस हेतु सुरत को अपने आत्मेश्वर के संग निरन्तर बनाये रखो। उनका संग प्राप्तकर उन्हीं के गुण व शक्ति को धारणकर निर्विकारिता से जगत में विचरने के योग्य बन परमात्म नाम कहाओ। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी में कितना अधिक परोपकार भरा हुआ है। हमें चाहिये कि इस वाणी को आत्मसात करने में तनिक भी विलम्ब न करें और अपना जीवनोद्धार कर लें। अब करना या रुके रहना तो आपके अपने हाथ में है। सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भिन्न-भिन्न तरीकों से हर सजन को सुचेत करते हुए कलुकाल के भाव-स्वभावों से ऊपर उठ सत्यनिष्ठा से धर्म मार्ग पर आगे बढ़ने का आवाहन दे रहा है। अतः कमजोर बनकर भूल मत करो और काममुक्त होकर खुद को सम्भाल लो। अभी भी जीवन की कुछ घड़ियाँ शेष बची हैं। अभी तक तो जीवन का जो दुरुपयोग कर चुके हो, वह तो हो गया पर अब तो होश में आकर अपने जीवन को इसी जीवन काल में आबाद कर सकते हो। आज सब सजन दृढ़-संकल्प हो जाना क्योंकि इस कार्य में अपना हित निहित है। अपना हित साधने हेतु कुछ भी कुर्बान करना पड़े तो उसमें सकुचाना नहीं चाहिये। इसीलिये सब लाभ उठाओ और आगे सुनोः

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)
श्री राम चरणों दी गोदी दा ओ कैसा है ओ राज।
कैसा अटल ओ राज है कैसा, कैसा अटल ओ साज।।
सज रिहा कैसा साज राम चरणों का कैसा सज रिहा राज।
श्री राम चरणों दी गोदी दा ओ कैसा है ओ राज।।

(श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)
साजन जी दर्शन करो मेरा दर्शन करां मैं तेरा।
इक रूप इको है सूरत इको है साडा चेहरा।।

(श्री साजन जी श्री रामचन्द्र जी को कह रहे हैं)
ए सीस डिगया चरणां उत्ते, सीस चरणां ते हमेशा ओ राहसी।
ए चरण अटल राज तों होये राज सदा सदा ओ राहसी।।

(श्री महाबीर जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)
असीस मेरी हो चुकी ओ साजन, ए राज सदा अटल राहसी।
राज निर्भय है युगों युगन्तर, राज सदा ओ रौशन राहसी।।

(श्री साजन जी श्री महाबीर जी को कह रहे हैं)
कैसी आप दी रहणी ओ बहणी, ख्याल आप दे कमाल।
कैसी है कीर्ति जगत ते आप दी कैसी है ओ विशाल।।
रौशनी दाते महाबीर जी दी फैल रही जगह जगह।
फैल रही ओ फैली राहसी फैली है सदा सदा।।
हनुमान जी तुम्हारे चरण इन नयनों दा है प्यार।
चरण नयनों दा आधार चरण इन नयनों दा है ओ सिंगार।।
इन नयनों पर उपकर हुआ इन नयनों दा है चमत्कार।
इन नयनों दा सीस ताज हुआ इन नयनों दा सिरजनहार।।

(श्री महाबीर जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)
सर्व दिस्सो सारी नगरी ऊपर फिर अनेक दा एक निगाह आसी।
आप तो हो निर्वाण दे अन्दर रूप रंग न रेखा ओ राहसी।।

हम मानते हैं कि इस कीर्तन को सुनने के पश्चात हर सजन के मन में अटल राज प्राप्तकर अपने जीवन को आनन्दमय बनाने के प्रति उत्कण्ठा उत्पन्न हुई होगी यानि ऐसा ही भाव पैदा हुआ होगा। अगर अपनी इस उत्तम इच्छा को जीवन रहते ही पूरा करना चाहते हो तो दिल से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र विहित वचनों के प्रति समर्पित हो जाओ। मन-वचन-कर्म को उनके वचनों के अनुकूल ढालकर अपने जीवन का वास्तविक अर्थ सिद्ध करने

में सफल हो जाओ। इस सन्दर्भ में सजनों मानो कि काम से मुक्ति पाकर निष्कामता का भाव अपनाकर परोपकार कमाने हेतु हमारे पास समर्पण के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है।

इसीलिये बनता है कि खुद को व परिवारवालों को समझाओ और इस तरह पुनः सद्मार्ग पर आ जाओ। अपने आपको भाग्यशाली समझो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी सुनने का आपको नित्य-प्रति अवसर प्राप्त हो रहा है। उस वाणी को इधर से सुनकर उधर से मत निकालो। इसके स्थान पर दुनियाँ को अपने अन्दर से निकालो, उसे धारण मत करो क्योंकि वह दुनियावी बातें मन को मलीन करती हैं। जानो कि मन को विशुद्ध अवस्था में साधे रखने के लिये शास्त्र विहित वाणी से उसका सींचन करो ताकि मन में जो भी विचार उठे, वह नितान्त सार्थक हो। सजनों अगर ऐसा सुनिश्चित कर लेते हो तो जानो कि आपका काम बन गया और आप स्वार्थ से परमार्थ हो गये। इस तरह आपने जीवन के परम अर्थ को सिद्ध कर लिया। सजनों यही परमधाम पहुँच सुरत का विश्राम पाने जैसी सर्वोत्तम बात है। इस तरह खुद पर उपकार करो और खुद के सजन बन, सबके सजन बन जाओ।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि जो सजनता का प्रतीक बन जाता है, वह परमात्म स्वरूप कहलाता है। आपने इस कीर्तन में भी अभी सुना है कि 'एक रूप हो जाता है'। यहीं से एकरूपता की समझ आती है। इसी के साथ हमें यह भी समझ आती है कि मानव रूप में प्राप्त विवेकशक्ति के बल पर हम भी एकरूपता का अनुभव कर ब्रह्ममय अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं। जब कुदरत की बनाई बनत के अनुसार हमें इस बात का ज्ञान हो गया कि हम यह कर सकते हैं तो फिर क्योंकर हम कमजोर पड़ते हैं? अतः हमें खुद को समझाना होगा और हिम्मत दिखाकर इस उत्तम कार्य की समय रहते ही सिद्धि कर लेनी होगी ताकि बाद में पछताना न पड़े। जब पछताना पड़ता है तो असहनीय दुर्गति होती है। सजनों हमारे जीवन काल में ऐसा समय न आये अतैव अभी से सम्भलने व सुधरने की आवश्यकता है। अतः हर सजन अपने पर कृपा कर अपना सजन बने और सजनता का प्रतीक बन सबमें सजनता का ही अनुभव करे। ऐसा करने पर आप बलिष्ठ हो जाओगे और इतने ताकतवर हो जाओगे कि मौत भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी क्योंकि जो अमर अवस्था को प्राप्त कर लेता है वह मौत व जगत से आज़ाद हो अपने स्थान पर विश्राम पाता है। अब विश्राम प्राप्ति हेतु स्वयं पर स्वयं ही नज़र रखनी होगी। मानो कि कोई अन्य आपका सुधार या उद्धार नहीं कर सकता। यह कार्य इन्सान को खुद ही करना पड़ता है। इसके लिये किसी पर आस मत रखो क्योंकि दूसरों पर आस रखोगे तो निराशा प्राप्त होगी। इसके विपरीत स्वयं करोगे तो निःसन्देह सफलता प्राप्त होगी।

आप अपने मकसद में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।